शेरशाह का आरम्भिक जीवन

शेरशाह का मूल नाम फरीद था। उसका जन्म 1472 ई० में होशियारपुर के पास बजवाड़ा नामक गाँव में हसन खां के यहाँ हुआ था। डॉ० कानूनगो के अनुसार उसका जन्म 1486 ई० में हिसार फिरोजा में हुआ था। फरीद के जन्म के बाद हसन खां जौनपुर के शासक जमाल खां के पास नौकरी करने लगा, जिसकी सिफारिश पर सिकन्दर लोदी ने हसन खां को सहसराम, ख्वासपुर तथा टांडा के परगने जागीर में दे दिये।

फरीद का बचपन सहसराम में बीता।

हसन के चार पत्नियां तथा आठ पुत्र थे। फरीद सबसे बड़ी पत्नी का पुत्र था, जिससे हसन प्रेम नहीं करता था। वह अपनी सबसे छोटी पत्नी से प्रेम करता था। अपनी सौतेली मां से तंग आकर फरीद जौनपुर चला गया, जहाँ उसने अरबी व फारसी की शिक्षा प्राप्त की एवं गुलिस्तां, बोस्तां, सिकन्दरनामा आदि ग्रन्थों का अध्ययन किया। वह अपनी योग्यता से जौनपुर में प्रसिद्ध हो गया।

हसन ने फरीद को सहसराम, ख्वासपुर तथा टांडा का प्रबंधक बनाया। फरीद ने वर्तमान शाहाबाद (दक्षिण बिहार) में स्थित इन जागीरों का बहुत अच्छा प्रबन्ध किया। उसकी सफलता से जल-भुनकर उसकी सौतेली माता ने उसे जागीरों से निकलवा दिया। अब फरीद बिहार के सूबेदार दरिया खां लोहानी के पुत्र

बहार खाँ लोहानी के पास नौकरी करने लगा। बहार खाँ उसकी योग्यता से बहुत प्रभावित हुआ। "एक बार जब फरीद बहार खां के साथ शिकार खेलने गया, तो उसने तलवार के एक ही वार से शेर को मार डाला। उसकी बहादुरी से प्रसन्न होकर बहार खां ने उसको शेर खाँ की उपाधि प्रदान की"। उसके बढ़ते प्रभाव से असंतुष्ट होकर अफगान सरदारों ने बहार खां को शेर खां के विरुद्ध भड़का दिया। अतः वह आगरा जाकर 1527 ई० में बाबर की सेना में भर्ती हो गया। बाबर की सेना में रहकर वह मुगल सैन्य संगठन की विशेषताओं तथा दोषों से परिचित हो गया था। 1528 ई० में वह बाबर की नौकरी छोड़कर बिहार चला गया।